

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड I

PART I-Section I

प्राधिकार से प्रकाशित



PUBLISHED BY AUTHORITY

सं 0 41]

नई दिल्ली, शक्रवार, ग्राप्रैल 9, 1965/चैत्र 19, 1887

No. 41]

NEW DELHI, FRIDAY, APRIL 9, 1965/CHAITRA 19, 1887

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या ही जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में रखा जा सके।

Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation

MINISTRY OF STEEL & MINES

RESOLUTION

New Delhi, the 7th April 1965

No. Ind-3(24) /64.—The Committee on Electric Furnaces, Steel Foundries and Steel Re-rolling Mills appointed in July. 1956, under the Chairmanship of Shri B. B. Saksena. Joint Secretary in the erstwhile Ministry of Commerce and Industry, had inter alia made an assessment of the capacity of existing re-rolling mills in the country. The assessment revealed considerable disparity between the sanctioned capacity of the units and their actual capacity. However, it was felt that further detailed technical scrutiny was necessary. Subsequently, during 1960-61, when there was a period of abundance of billets as a result of the time-lag between commencement of steel production and the commissioning of finishing mills of the main steel works, the billet re-rollers were free to indent for as much quantity of billets as could be consumed by them. The production recorded during this period would, it was considered, reflect the capacity of the billet re-rollers more or less realistically. It was, therefore decided to fix the billet entitlement of the re-rollers working on billets on the basis of production recorded during this period. Even this criterion was not fully satisfactory and there have been representations to the Government for fixing the capacity of the various re-rolling units—both scrap-based and billet-based on a more realistic basis,

The Government of India have, therefore, decided to set up a Technical Committee to make a rational assessment of the capacity of the re-rolling mills. The composition of the Committee will be as follows:—

Chairman

1. Shri S. C. Mukherjee, Dy. Iron & Steel Controller.

Members

- 2. Shri Viren J. Shah, The Steel Re-rolling Mills Association of India.
- 3. Shri M. Panje, Chief Supdt. Rolling Mills, Bhilai.

The Committee will-

- (a) assess the capacity of re-rolling mills whether working on billets or
- (b) recommend what types of merchant products the re-rolling mills can roll economically; and
- (c) Indicate what units are out-dated and/or un-economic.

The Committee will submit its report by the end of August, 1965.

Ordered that a copy of the above Resolution be communicated to all State Governments. all Ministries of Government of India, Prime Minister's Secretariat, Cabinet Secretariat. Parliament Secretariat, the Private and Military Secretaries to the President, the Planning Commission, the Comptroller and Auditor General of India, the Accountant General, Central Revenues.

The Directorate General of Technical Development, New Delhi,

Iron and Steel Controller, 33-Netaji Subhas Road, Calcutta.

The Steel Re-rolling Mills Association of India 2-Brabourne Road, Calcutta.

Ordered also that it be published in the Gazette of India, Extraordinary.

G. RAMANATHAN, Jt. Secv.

इस्पात और खान मंत्रालय नई दिल्ली, ता॰ 7 घरौल 1965

संकल्प ै

संख्या-इ-खस्ट्री-3(24)/64--भृतपूर्व वाणिज्य श्रीर उद्योग मंत्रालय के संयुक्त सचिव श्री बी०बी० सक्सेना की ग्रध्यक्षना में जुलाई, 1956 में नियुक्त विद्युत मट्टी, इस्पात ढलाई घर श्रीर इस्पात पुनर्बेलन मिल विषय समिति ने ग्रन्य वातों के साथ साथ देश की पुनर्बेलन मिलों की वर्तमान क्षमता का मूल्यांकन किया था । इस " मूल्यांकन मे ज्ञात हुश्रा कि इन इकाइयों की स्वीकृत क्षमता और वास्तविक क्षमता में बड़ा श्रन्तर है। तथापि यह श्रनुभव किया गया कि इसकी श्रीर विस्तृत तकनीकी पड़ताल की श्रावश्यकता है। तल्पश्चात 1960-61 में, जब प्रमुख इस्पात कारखानों के इस्पात-उल्पादन श्रीर फिनिशिंग मिलों के कार्यारम्भ में समयान्तर के परिणामस्वरूप बिलेटों की प्रचुरता थी तब बिलेट-पुनर्वेलन मिलोंको छूट थी कि वे श्रपनी खपतको श्रावश्यकता श्रनुसार बिलेट के लिए इन्हेंन्ट भेज सकते हैं। यह विचार किया गया था कि इस श्रवधि के उत्पादन से बिलेट पुनर्वेलन मिलों की यथार्थ क्षमता प्रकट होगी । श्रतः बिलेट के पुनर्वेलन कत्तिश्रों की बिलेट सावश्यकताएं इस श्रवधि में हुए उत्पादन के श्राकड़ों के श्राधार पर निर्धारित करने का निश्चय किया गया । यह मापदण्ड भी पूर्णतया सन्तोषजनक नहीं था। सरकार को इस बाबत श्रनेक श्रम्यावेदन प्राप्त हुए हैं कि विभिन्न पुनर्वेलन इकाइयों की स्क्रेप-श्राधारित ग्रीर बिलेट श्राधारित दोमों की-अमता श्रियक यथार्थ श्राधार पर पुनः निर्धारित की जाए।

श्रतः भारत सरकार ने पुनर्बेलन मिलों की क्षमता का तर्क संगत मूल्यांकन करने के लिए एक सकनीकी समिति स्थापित करने का निण्चय किया है। समिति का गठन इस प्रकार है:—

ग्रध्यक्ष

 श्री एस० सी० मुखर्जी, लोहा श्रीर इस्पात के उप-नियंत्रक

सदस्य

श्री वीरेन जे० शाह,
दि स्टील रि-रोलिंग मिल्स एसोसिएशन श्राफ इंडिया

 श्री एम० पांजे, मुख्य अधीक्षक, पुनर्वेलन मिल, भिलाई

समिति निम्नलिखित काम करेगी:---

- (क) बिलेट श्रथवा स्क्रेप का प्रयोग करने वाली पुनर्बेलन मिलों की क्षमता का मृत्यांकन करना;
- (ख) यह सिफारिश करना कि पुनर्बेलन मिलें किस प्रकार वाणिज्यिक उत्पाद का लाभ-प्रद रूप में बेलन कर सकती हैं; ग्रौर
- (ग) यह बताना कि कौन सी इकाइयां पिछड़ी हुई श्रीर/श्रथवा श्रलाभप्रद हैं। समिति श्रगस्त, 1965 के श्रन्त तक श्रपनी रिपोर्ट देगी।

श्रावेश दिया जाता है कि उपर्युक्त संकल्प की प्रति सभी राज्य सरकारों, भारत सरकार के सभी मंत्रालयों, प्रधान मंत्री के सिववालय, मंत्रि-मंडल सिववालय, संसद सिववालय, राष्ट्रपति, के निजी तथा मिलिटरी सिववों, योजना श्रायोग, भारत के नियंत्रक महालेखा परीक्षक श्रीर केन्द्रीय राजस्व के महालेखापाल को तथा महानिदेशक, तकनीकी विकास, नई दिल्ली, लोहा श्रीर इस्पात नियंत्रक, 33, नेताजी सुभाष रोड, कलकत्ता, एवम स्टील रि-रोलिंग मिल्स एसोसिएशन श्राफ इंडिया, 2—त्राबोर्न रोड, कलकत्ता को भेजी आए।

यह भी आदेश दिया जाता है कि इसे भारत के श्रसाद्यारण राजपत्र में प्रकाशित किया जाए । जी० रामनाथन, संयुक्त सचिव, भारत सश्कार